HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-III (Mediaeval Indian History)

Unit-III, (Balban Dynasty)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 11

बलबनी वंश (1265-1290)

Balban Dynasty

गयासुद्दीन बलबन (1265 से 1287)

इल्बारी जाति के गयासुद्दीन बलबन ने एक नये राजवंश बलबनी वंश' की स्थापना की। बलबन को ख्वाजा जलालुद्दीन बसरी नाम का एक व्यक्ति खरीद कर 1232-33 में दिल्ली लाया था। इल्तुतमिश ने ग्वालियर को जीतने के उपरान्त बहाउद्दीन बलबन को खरीद लिया। अपनी योग्यता के कारण ही बलबन इल्तुतमिश के समय में खासकर रजिया के समय में अमीर-ए-शिकार, बहरामशाह के समय में अमीर-ए-आखूर, मसूदशाह के समय अमीर-ए-हाजिब एवं सुल्तान नासिरुद्दीन के समय अमीर-ए-हाजिब नाइब के रूप में राज्य की सम्पूर्ण शक्ति का केन्द्र बन गया । नासिरुद्दीन की मृत्यु के उपरान्त 1266 में अमीर सरदारों के सहयोग से गयासुद्दीन बलबन के नाम से दिल्ली के राज्यसिंहासन पर बैठा । इस प्रकार यह इल्बारी जाति का द्वितीय शासक बना।

बलबन ने इल्तुतमिश द्वारा स्थापित चालीस तुर्की सरदारों के दल को समाप्त किया, तुर्क अमीरों को शक्तिशाली होने से रोका तथा अपने शासन काल में हुए एकमात्र तुर्क विद्रोह बंगाल का विद्रोह जहाँ का शासक तुगरिल खाँ अपने को स्वतन्त्र घोषित कर दिया था, का बखूबी दमन किया । बंगाल की तत्कालीन राजधानी लखनौती को उस समय विद्रोह का नगर कहा जाता था। तुगरिल वेग को पकड़ने एवं उसकी हत्या करने का श्रेय मलिक मुकदीर को मिला,चूकि इसके पहले तूगरील को पकड़ने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ा था इसलिए मुकदीर की सफलता से प्रसन्न होकर बलबन ने उसे 'तुगरिल कुश' (तुगरिल की हत्या करने वाला) की उपाधि प्रदान की । इसके अतिरिक्त बलबन ने मेवातियों एवं कटेहर में हुए विद्रोह का भी दमन किया तथा दोआब एवं पंजाब क्षेत्र में शान्ति स्थापना की।

पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त पर मंगोल आक्रमण के भय को समाप्त करने के लिए बलबन ने एक सुनिश्चित योजना का क्रियान्वयन किया। सैन्य विभाग 'दीवान-ए-अर्ज' को पुनर्गठित करवाया, इमादुलमुल्क को दीवान-ए-अर्ज के पद पर प्रतिष्टित फिया तथा

सीमान्त क्षेत्र में स्थित किलो का पुनर्निर्माण करवाया । अयोग्य एवं वृद्ध सैनिकों को पेंशन देकर मुक्त करने की योजना चलाई तथा बलबन ने अपने सेनिको को वेतन का भुगतान नकद वेतन में किया । इसने तुर्क प्रभाव को कम करने के लिए फारसी परम्परा पर आधारित सिजदा (घुटने पर बैठकर सिर झुकाना) एवं पाबोस (सम्राट के सामने झुककर उसके पाव को चुमना) के प्रचलन को अनिवार्य कर दिया। बलबन ने गुप्तवर विभाग की स्थापना राज्य के अन्तर्गत होने वाले षड्यंत्रों एवं विद्रोहों के विषय में पूर्व जानकारी के लिए किया। इसने फारसी रीति-रिवाज पर आधारित नवरोज उत्सव को प्रारम्भ करवाया अपने विरोधियों के प्रति बलबन कठोर लौह एवं रक्त नीति का पालन किया । इस नीति के अन्तर्गत विद्रोही व्यक्ति की हत्याकर उसके स्त्री एवं बच्चों को दास बना लिया जाता था।

बलबन का राजत्व सिद्धांत :-

बलबन दिल्ली सल्तनत का पहला ऐसा सुल्तान था जिसने अपने राजत्व सिद्धान्त की विस्तार पूर्वक व्याख्या की। इसके राजत्व सिद्धांत के महत्वपूर्ण तत्व थे:-

राजवंश, राजा को राजवंश से सम्बन्धित होना चाहिए

राजत्व को दैवी संस्था मानते हुए बलबन ने कहा कि राजा पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि (नियामतें खुदाई) होता है, अतः उसके द्वारा किया गया कार्य न्याय संगत होता है। बलबन ने उच्च कुल एवं निम्न कुल के व्यक्तियों के बीच अन्तर स्थापित करने को महत्व दिया। बलबन के अनुसार राजत्व के लिए भव्य दरबार एवं दिखावटी मान-मर्यादा का होना आवश्यक है। बलबन ने फारसी रीति-रिवाज पर आधारित उनके राजाओं के नाम की तरह अपने पुत्रों का नाम कैकुबाद, कैखुसरो एवं कैकाउस रखा, इसका दरबार ईरानी परम्परा के अंतर्गत सजाया गया था। बलबन ने ईश्वर, शासक तथा जनता के बीच त्रिपक्षीय सम्बन्धों को राजत्व का आधार बनाना चाहा। इसने राजा द्वारा निष्पक्ष एवं कठोर न्याय किये जाने को महत्व दिया और साथ ही कुरान के नियमों को शासन का आधार बनाया । बलबन ने खलीफा के महत्व को स्वीकार करते हुए अपने द्वारा जारी किये गये सिक्कों पर खलीफा के नाम को अंकित कराया तथा उसके नाम से खुतबे भी पढ़े।

अपने प्रिय पुत्र मुहम्मद की मृत्यु के सदमे को न बर्दाश्त कर पाने के कारण 80 वर्ष की अवस्था में 1286 में बलवन की मृत्यु हो गई । मृत्यु पूर्व बलबन ने अपने पौत्र कैखुसरो को अपना उत्तराधिकारी बनाया । बलबन शरीयत का कट्टर समर्थक था और वह दिन में 5 बार नमाज पढ़ता था। सुल्तान बनने के बाद उसने शराब तथा भोग विलास को पूर्णतः त्याग दिया । उलेमाओं का बलबन बहुत सम्मान करता था । इसने अपने राजदरबार में अनेक कलाकारों एवं साहित्यकारों को संरक्षण प्रदान किया। इसके राज्याश्रय में फारसी के प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो एवं अमीर हसन रहते थे। इनके अतिरिक्त ज्योतिषी एवं चिकित्सक मौलाना हमीदुद्दीन मुतरीज, प्रसिद्ध मौलाना बदरुद्दीन एवं मौलाना हिसानुद्दीन इसके दरबार में रहते थे ।

बलबन के उत्तराधिकारी:-

(कैकुबाद एवं शम्सुद्दीन क्यूमर्स -1287 से 1290)

बलबन अपनी मृत्यु से पूर्व कैखुसरो को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था, पर दिल्ली के कोतवाल फखरुद्दीन मुहम्मद ने बलबन की मृत्यु के बाद कूटनीति के द्वारा कैखुसरो को मुल्तान की सुबेदारी देकर कैकुबाद को 17 या 18 वर्ष की अवस्था में दिल्ली की गद्दी पर बैठाया । फखरुद्दीन के दामाद निजामुद्दीन ने अपने एक कुचक्र के द्वारा सुल्तान को भोग विलास में लिप्त कर स्वयं सुल्तान के सम्पूर्ण अधिकार को 'नाईब बन कर प्राप्त कर लिया, निजामुद्दीन के प्रभाव से मुक्त होने के लिए कैकुबाद ने उसे जहर देकर मरवा दिया ।

कैकुबाद ने गैर तुर्क सरदार जलालुद्दीन फिरोज खिलजी को अपना सेनापति बनाया जिसका तुर्क सरदारों पर बुरा प्रभाव पड़ा । तुर्क सरदार बदला लेने की बात को सोच ही रहे थे कि कैकुबाद को लकवा मार गया। प्रशासन के कार्यों में उसे अक्षम देखकर तुर्क सरदारों ने उसके तीन वर्षीय पुत्र शम्सुद्दीन को सुल्तान घोषित कर दिया । कालान्तर में जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने उचित अवसर प्राप्त कर शम्सुद्दीन क्यूमर्स का वध कर दिल्ली के तख्त पर स्वयं अधिकार करके खिलजी वंश की स्थापना की।

धन्यवाद